मैत्रावरुणर्वसिष्ठः।अग्निः। प्रगाथः (विषमा बृहती, समा सतोबृहती।

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे।
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम्॥ ७.०१६.०१

एना- एनम्। वः- त्वाम्। ऊर्जो नपातम्- शाक्तम्। प्रियम्- प्रेमभाजनम्। चितिष्ठम्- अतिशयेन चैतन्यवितरणशीलम्। अरतिम्- विरक्तम्। स्वध्वरम्- शोभनध्वररहितकर्मवन्तम्। विश्वस्य- सर्वस्य यजमानस्य। दूतम्। अमृतम्- अमृतस्वरूपम्। अग्निम्- पावकं सत्क्रतुम्। आ हुवे- आह्वये ॥१॥

स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत्स्वाहुतः।
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवं राधो जनानाम्॥ ७.०१६.०२

सः- असावग्निः। विश्वभोजसा- सर्वपालकौ। अरुषा- रोचमानौ प्राणतुरगौ। योजते- योजयति। स्वाहुतः- सुष्ठु आहूतः। सः। दुद्रवत्- द्रवति। सुब्रह्मा- सुब्रह्मण्यः। यज्ञः- यज्ञस्यात्मा। सुशमी- शान्तिकरः। तम्। वसूनाम्- सम्पदाम्। देवम्- द्योतकम्। जनानाम्- विशाम्। राधः- हव्यमभिगच्छतु ॥२॥

उदस्य शोचिरस्थादाजुह्वानस्य मीळ्हुषः।
उद्धूमासो अरुषासो दिविस्पृशः समग्निमिन्धते नरः॥ ७.०१६.०३

आजुह्वानस्य- आहुतस्य। मीळ्हुषः- आनन्दकरस्य। अस्य- एतस्य। शोचिः- प्रकाशः। उदस्थात्- उत्तिष्ठति। अरुषासः- रोचमानाः। धूमासः- धूमाः। दिविस्पृशः- नभःस्पृशः। उद्गच्छन्ति। नरः- मनुष्याः। अग्निम्। समिन्धते- उद्दीपयन्ति ॥३॥

तं त्वा दूतं कृण्महे यशस्तमं देवाँ आ वीतये वह।
विश्वा सूनो सहसो मर्तभोजना रास्व तद्यत्त्वेमहे॥ ७.०१६.०४

Dr. Rangaji
WEBOLIM

यशस्तमम्- अतिशयेन कीर्तिमन्तम्। दूतम्। त्वा- त्वाम्। तम्। कृण्महे- कुर्मः। वीतये- हव्यग्रहणाय। देवान्। आ वह- प्रापय। सहसः सूनो- शक्तिज। यत्- यानि। त्वा- त्वत्तः। ईमहे- याचामहे तानि। विश्वा- सर्वाणि। मर्तभोजना- मनुष्याणां भोग्यानि कल्याणानि। रास्व- यच्छ ॥४॥

त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे।
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि वेषि च वार्यम्॥ ७.०१६.०५

अग्ने। त्वम्। गृहपतिः- कुटुम्बपालकः। नः- अस्माकम्। अध्वरे- ध्वरविरोधिकर्माणि सर्वभूतहितकर्माणि। त्वम्। होता- देवानामाह्वाता। त्वम्। पोता- रक्षकः। विश्ववार- सर्वैर्वरणीय। प्रचेताः- प्रकर्षचेतनः। यक्षि- यज। वार्यं- श्रैष्ठ्यम्। वेषि- कामय। च ॥ ।५॥

कृधि रत्नं यजमानाय सुक्रतो त्वं हि रत्नधा असि।
आ न ऋते शिशीहि विश्वमृत्विजं सुशंसो यश्च दक्षते॥ ७.०१६.०६

यजमानाय- दानशीलाय। सुक्रतो- सत्क्रतो। रत्नम्- हितरमणीयभावनम्। कृधि- कुरु। त्वम्। हि- खलु। रत्नधाः- हितरमणीयभावनाधारकः। असि- भवसि। नः- अस्मान्। ऋते- धर्मे। शिशीहि- तीक्ष्णीकुरु। विश्वम्- सर्वम्। ऋत्विजम्- आचार्यम्। शिशीहि। यश्च। सुशंसः- शोभनस्तोता। दक्षते- वर्धते तं शिशीहि ॥६॥

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः।
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वान्दयन्त गोनाम्॥ ७.०१६.०७

ये। मघवानः- सम्पद्वन्तः। यन्तारः- नियमसम्पन्नाः। जनानाम्- जनेभ्यः। गोनाम् ऊर्वान्- गोसङ्घान् चिद्रश्मिसमूहान् वा। दयन्त- यच्छन्ति। ते। स्वाहुत- सुष्ठु आहूत। अग्ने। त्वे- त्वयि। सूरयः- मेधाविनः। प्रियासः- प्रियाः। सन्तु- भवन्तु ॥७॥

येषामिळा घृतहस्ता दुरोण आँ अपि प्राता निषीदति।

Dr. Rangaji
WEBOLIM

ताँस्त्रायस्व सहस्य द्रुहो निदो यच्छा नः शर्म दीर्घश्रुत्॥ ७.०१६.०८

येषाम्। घृतहस्ता- दीप्तभुजा। इळा- वाग्देवी। प्राता- पूर्णा। अपि- च। दुरोणे- सद्मनि। निषीदति- उपविशति। तान्। सहस्य- सहसे शक्त्यै। द्रुहः- द्रोग्धुः। निदः- निन्दकात्। त्रायस्व- पालय। नः- अस्मभ्यम्। दीर्घश्रुत्- दीर्घकालप्रसिद्धम्। शर्म- भद्रम्। यच्छ- देहि ॥८॥

स मन्द्रया च जिह्वया वह्निरासा विदुष्टरः।

अग्ने रयिं मघवद्भ्यो न आ वह हव्यदातिं च सूदय॥ ७.०१६.०९

सः- असौ त्वम्। मन्द्रया- सुखकर्या। जिह्वया- ज्वालया। आसा- मुखेन। वह्निः- वोढा। विदुष्टरः- विद्वत्तरः। अग्ने। मघवद्भ्यः- हव्यवद्भ्यः। रयिम्- दानयोग्यधनम्। नः- अस्मभ्यम्। आ वह। हव्यदातिम्- हव्यदानम्। च- अपि। सूदय- प्रेरय ॥९॥

ये राधांसि ददत्यश्व्या मघा कामेन श्रवसो महः।

ताँ अंहसः पिपृहि पर्तृभिष्ट्वं शतं पूर्भिर्यविष्ठ्य॥ ७.०१६.१०

महः- महत्याः। श्रवसः- श्रुत्याः। कामेन- इच्छया। ये। राधांसि- संसिद्धीः। अश्व्या मघा- प्राणतुरगसम्पदः। ददति- यच्छन्ति। तान्। पर्तृभिः- रक्षाशक्तिभिः। शतं पूर्भिः- अनन्तरक्षावरणैः। यविष्ठ्य- युवतम। अंहसः- अघात्। पिपृहि- पालय ॥१०॥

देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्यासिचम्।

उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते॥ ७.०१६.११

देवः। द्रविणोदाः- सम्पद्दायकः। वः- युष्माकम्। पूर्णां- सोमरसपूर्णाम्। आसिचम्- आसिक्तां स्रुचम्। विवष्टि- कामयते। उत् सिञ्चध्वम्- क्षारयत। पृणध्वम्- पूरयत। देवः- द्योतनशीलोग्निः। वः- युष्मान्। ओहते- वहति ॥११॥

तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत।

दधाति रत्नं विधते सुवीर्यमग्निर्जनाय दाशुषे॥ ७.०१६.१२

Dr. Ranganji

WEBOLIM

होतारम्- देवानामाह्वातारम्। अध्वरस्य- ध्वरविरोधिकर्मणः सर्वभूतहितकर्मणः। प्रचेतसम्- प्रज्ञापकम्। वह्निम्- वोढारम्। तम्। अकृण्वत- अकुर्वन्। विधते- परिचरते। दाशुषे- दात्रे। जनाय। सुवीर्यं- शोभनवीर्यसम्पन्नम्। रत्नम्। दधाति- यच्छति ॥१२॥

Dr. Ranganji

WEBOLIM